# आजी सोनियाचा दिनु

आज स्वर्णिम दिन है!
मेघ खुलकर मुझ पर अपने अमृत की वर्षा कर रहे हैं।
मैंने हरि को देखा! मुझे अपने प्रभु श्रीहरि के दर्शन हुए!

भगवान मुरारी अन्तर में भी हैं
और बाहर भी हैं।
वे समस्त स्थानों और वस्तुओं में व्याप्त हैं, वे हर कहीं हैं।

अपने मन के मूल में
मैंने अत्यधिक मनमोहक रूप में दीप्तिमान
भगवान विठ्ठल के दर्शन किए,
जो अपनी ईंट पर दृढ़ता से खड़े हैं।

सन्तजन की संगति में होना
सबसे अनमोल अशीर्वाद है।
उनके पूजनीय सान्निध्य में,
भगवान ने, उन आत्माराम ने
मेरे अपने हृदय में स्वयं को प्रकट किया।

देवी रुक्मिणी के प्राणवल्लभ, भगवान विठ्ठल
मेरे पिता हैं।
वे करुणा के सागर हैं।
वे कृपासिन्धु हैं।

अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

परिचय : शाम्भवी क्रिश्चन

यदि आपको ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा रचित श्रीमद्भगवद्गीता पर काव्यात्मक व्याख्या 'ज्ञानेश्वरी' पढ़ने का अवसर मिला है तो आपको इस बात का स्वयं अनुभव करने का सद्भाग्य अवश्य मिला है कि महाराष्ट्र राज्य में हुए तेरहवीं शताब्दी के ये पूजनीय सन्त-कवि किस प्रकार सिखाया करते थे और आज भी सिखा रहे हैं। मराठी भाषा में अपने इस काव्य द्वारा जो सरल होने के साथ-साथ गूढ़ भी है, उपमाओं के विलक्षण प्रयोग द्वारा और अपनी मार्मिक अन्तर्दृष्टियों द्वारा, वे अपने करुणामय उद्देश्य को प्रकट करते हैं। उनका उद्देश्य है, हर व्यक्ति को इसका ज्ञान मिले कि वह भगवान को किस प्रकार पा सकता है। उनका हरेक शब्द दिव्य प्रज्ञान व भक्ति से ओत-प्रोत है।

अपने अभंगों [मराठी भाषा के भक्तिगीतों] में भी ज्ञानेश्वर महाराज इसी तरह सिखाते हैं। उनसे मेरा परिचय ऐसे ही एक अभंग द्वारा हुआ और वह अभंग था, "आजी सोनियाचा दिनु।" १९८० के दशक की शुरुआत में एक दिन गुरुदेव सिद्धपीठ में एक सत्संग के दौरान, श्रीगुरुमाई ने एक सिद्धयोग संगीत सेवाकर्ता को इसे गाने के लिए कहा। हालाँकि, इस अभंग का अर्थ मेरी समझ में नहीं आया, फिर भी इस अभंग को सुनते समय यह मेरे हृदय को गहराई से छू गया। कुछ ही समय बाद मैंने संगीत की सेवा अर्पित करना आरम्भ किया; मैं दर्शन के दौरान भजन व अभंग गाने लगी और इस प्रकार मैंने यह अनुपम अभंग सीखा और इसे अकसर गाया भी। वास्तव में, साल-दर-साल, एक-के-बाद-एक दर्शन के दौरान कोई दर्शन-सेवाकर्ता श्रीगुरुमाई का नोट लेकर मेरे पास आतीं और वह होता कि मैं "आजी सोनियाचा दिनु" गाऊँ।

कुछ वर्ष बाद मैंने इस अभंग का एक अंग्रेज़ी भाषान्तर भी बनाया, "This Day is a Golden Day" [दिस डे इस अ गोल्डन डे] और उसे रिकॉर्ड भी किया। [इसकी रिकॉर्डिंग सिद्धयोग बुकस्टोर में उपलब्ध है।]

यह अभंग मुझे इतना प्रिय क्यों है? क्योंकि यह सिद्धयोग पथ का अनुसरण करने के मेरे अनुभव को और मेरी अपनी श्रीगुरुमाई से कृपा प्राप्त होने के मेरे अनुभव को भी बखूबी दर्शाता है। यह मेरे अपने हृदय का गीत है।

सिद्धयोग संगीत सेवाकर्ता जिस धुन में इस अभंग को गाते हैं वह हृदयनाथ मंगेश्कर जी द्वारा 'राग भैरवी' में की गई एक संगीत-रचना पर आधारित है। भैरवी जिसे "रागों की रानी" कहा जाता है, मधुर ललक में भीगे गहन भक्ति के रस को अभिव्यक्त करता है।

इस अभंग के साथ जिस छवि को दर्शाया गया है वह आलन्दी नगर में स्थित ज्ञानेश्वर महाराज के समाधि-मन्दिर की है। यह तस्वीर सन् १९६९ में ली गई थी जब इन अमर सन्त-कवि का सम्मान करने के लिए बाबा मुक्तानन्द ने आलन्दी की यात्रा की थी।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

स्वामी कृपानन्द द्वारा लिखित, *Jnaneshwar's Gita: A Rendering of the Jnaneshwari* सिद्धयोग बुकस्टोर पर उपलब्ध है।